

क्यास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर सेमिनार आयोजित

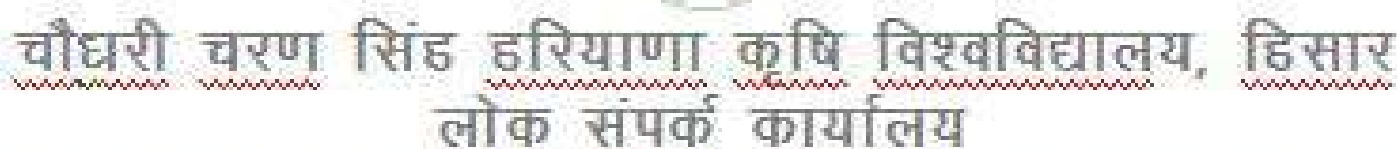
कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

[illegible][illegible]

समुदायिक न्यायिक या न्यायिक को न्यायिक
न्यायिक न्यायिक या न्यायिक को न्यायिक
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को
न्यायिक को न्यायिक न्यायिक न्यायिक को

संस्कृत भाषा में लिखित ३२ प्रमाण, अर्थात् प्रमाण

[illegible]



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.07.2021	-	-

**मानव कठिन परिश्रम को कम करने
के लिए इंजीनियरिंग के योगदान
विषय पर वेबिनार आयोजित**

[illegible]

Abstract

[illegible]



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैंलो हिसार	13.07.2021	—	—

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सांसांतिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की पैदाईश बढ़ती रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती पैदाईश को पूरा करने के लिए उत्पादन में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अच्छा उपाय है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं जीटोनिंगी



महाविद्यालय के परम पाठ्यक्रम एवं पाठ्य इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए सर्वोत्तम विचार पर वर्तमान समय से आयोजित वेबिनार को बहुरीन मुहूर्तार्थि संवेधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिपति डॉ. अमरजीत बालरा ने मुहूर्तार्थि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम को रूपरेखा में

अवगत कराया। कुलपति ने हरियाणा प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में मशीनीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारकों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने संबोधनों में अग्रसर करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय पाठ्यक्रमों का निर्माण करें जिससे आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। भारतीय कृषि

कपास की फसल में मानव श्रम परीक्षण को कम करने के लिए इंजीनियरिंग इन्टरनेट विचार पर वेबिनार आयोजित

विश्वविद्यालय के ध्यान में रखते हुए, देश को भारत में मशीनीकरण उच्च निर्यात में, एयर ऑपरेटिंग मशीन, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक मशीन और हरियाणा मशीन जैसे क्षेत्रों में तकनीकों के विकास पर ध्यान दिया।

कुलपति ने कहा कि भारत की कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.30 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	12.07.2021	—	—

कपास की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता: कुलपति

विभाग-12 नुसार/विशेषज्ञ

कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग महत्वपूर्ण होने की अपेक्षा है, इसलिए इस महत्वपूर्ण मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। कपास तैयार करने के साथ-साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु सर्वोत्तम एक अच्छी तकनीक विकल्प है, जो हमको लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विशाल क्षेत्रों पर यह मिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. कामोब ने कहा। ये विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के राज्य स्तरीय एवं राज्य इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में कपास कम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किंग्स एन. अभिषेक विभाग पर सर्वोच्च माध्यम से आयोजित वैश्वीकरण की बड़ी मुहूर्तविधि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अभिषेक डॉ. अमरजीत

कालड़ा ने मुहूर्तविधि का उद्घाटन करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत में उद्घाटन किया। कुलपति ने प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में सर्वोत्तमकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारकों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि कपास के अच्छे उत्पादन हेतु समय पर भूमि की पैदाई के साथ-साथ समय पर बुवाई, सिंच-पुर्वाई तथा बीज प्रबंधन बहुत जरूरी है जिस कार्य हेतु कई उच्च बुवाई मशीन, स्वचालित बीज, डॉ. क्लिफोर्ड कामोबेरा, आयुर्विज्ञान शोध आदि उपलब्ध हैं। उन्होंने सोपबर्कर्सों से अपेक्षा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें जिससे आयुर्विज्ञान तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिले। कुलपति ने कहा कि भारत की कपास की खेती के लक्ष्य समझे बहुत क्षेत्र होने का दौरा जल्द है जोकि कपास की खेती के लक्ष्य 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विस्तार क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन जल्द जो किसान में 501 किसान

हेक्टेयर है, जिस को औसत जल लगभग 200 लिटर हेक्टेयर की कृषि में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उत्पादित है, जिसमें औसत उत्पादन 371 किलोग्राम/ हेक्टेयर होता है। अनुसंधान विभाग डॉ. एमके सहस्रवाल ने कहा कि हमें कपास की बुवाई हेतु उपलब्ध मशीनों का इस्तेमाल हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बीज तथा अर्थ बीज विभाग विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि इन मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत न आए। वैश्वीकरण के प्रमुख कक्षा पंजीयन कृषि विश्वविद्यालय मुंबईयन से डॉ. संजय मिह ने कपास की खेती में सर्वोत्तमकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में किसानों में उपलब्ध मशीनों तथा क्षीय में उपलब्ध साधित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी। एचएन से डॉ. विजय राणे, इंजीनियर भारत पौरे, इंजीनियर अनु उपलब्ध तथा डॉ. प्रदीप राज ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	12.07.2021	—	—

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

कपास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार आयोजित

हिसार : कपास फसल की सबसे महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है और यह देश के अर्थव्यवस्था और आर्थिक समस्याओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की फसल समझने और समझने के, एकीकृत रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है।

हिसार, जलवायु में सुखा की समस्याग्रस्त है। कपास की फसल करने के लिए कठिन परिश्रम की जरूरत है। एकीकृत रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है। कपास की फसल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की फसल समझने और समझने के, एकीकृत रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है।



कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर डेकिंग	13.07.2021	--	--

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

एचआर डेकिंग न्यूज

कपास की फसल में मानव
कठिन परिश्रम को कम
करने के लिए इंजीनियरिंग
हस्तक्षेप विषय पर
वेबिनार आयोजित

हिसार। कपास फसल की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की खेती बलवृद्ध रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उपकरणों में सुधार की आवश्यकता है।

मानव श्रम को कम करने के साथ-साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विचार्य है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं औद्योगिकी महाविद्यालय के कार्यकारी एवं कानन इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए अध्ययन विषय पर बहुप्रभास माध्यम से आयोजित वेबिनार को संबोधित मुलाखतीय संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ.



वेबिनार के दौरान संबोधित करने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज व अन्य।

अपराजित बरगड़ा ने मुलाखतीय का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत से अवगत कराया। कुलपति ने हरियाणा प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में मशीनीकरण को उपयुक्त करने वाले कारकों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने इस क्षेत्र पर जोर देते हुए कपास की फसल के अच्छे उत्पादन हेतु समय पर बुवाई, निवाई-मुलाई तथा बीज प्रबंधन बहुत जरूरी है जिस कार्य हेतु कई उन्नत मुलाई मशीन,

समयानित बीज, हार्ड किलरींग मशीनें, आधुनिक सेयर आदि उपलब्ध है। उन्होंने कंपार्टमेंटों से अवगत करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें जिनमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिले। भारतीय कृषि सिद्धियों को ध्यान में रखते हुए ड्रोन की मदद से सब-सॉलर तथा निचोरी सेयर, एयर ऑपरेटेड सेयर, हाइड्रोलॉजिक सेयर और एरियल सेयर जैसी चीजों का संशोधन तकनीकों के विकास पर जोर दिया।

बिजौरी का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम

कुलपति ने कहा कि भारत की कपास की खेती के लिय सबसे बड़ा क्षेत्र होने का शौर्य प्राप्त है जो कि कपास की खेती के लिय 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 50% निचोरी-बीज है, जिस की औसत उपज लगभग 700 किग्रा.हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 0.40 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उपज प्राप्त है, जिसमें औसत उत्पादन 37% निचोरी-बीज / हेक्टेयर होता है। अनुसंधान विभाग डॉ. एच.के. बरगड़ा ने कहा कि इस कपास की मुलाई हेतु उपलब्ध मशीनों का उपयोग इसी देश में बढ़ाने हेतु कपास की खेती तथा अन्य खेती विषय विकसित करने की आवश्यकता है जिसकी की इस मशीनों के परिणाम में कई दिक्कत न आए। इस वेबिनार के प्रमुख अतिथि प्रो.बी.आर. काम्बोज विश्वविद्यालय लुधियाना की डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु दो नई आयोजना कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में खेती में उपलब्ध मशीनों तथा भविष्य में उपलब्ध मशीन होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हरि न्यूज

13.7.21

9

2-5

खेती

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने आह्वान किया

कपास की खेती पर वेबिनार, मशीनों का ज्यादा प्रयोग करने से ही उत्पादन बढ़ेगा

हरि न्यूज >> हिसार

कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है। देश में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम कम करने के साथ-साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे।

वे कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग के कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर आयोजित



हिसार। वेबिनार के दौरान संबोधित करते हकृषि कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

- कपास की फसल में मानव श्रम कम करने के लिए वेबिनार में किया मंथन
- पंजाब कृषि विवि के विशेषज्ञों ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया

बिजाई का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम: कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जोकि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 789 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है।

वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय

के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए

कपास की बौनी किस्म विकसित करने की जरूरत: अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई के लिए उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने के लिए कपास की बौनी तथा अर्ध-बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे की इस मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत नहीं आए। वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा मविष्य में उपयोगी होने वाली मशीनों बारे जानकारी दी।

कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समय 23 जून 2021	13.7.21	3	6.8

कपास में मशीनीकरण का उपयोग कम करेगा लागत इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किया वेबिनार



कुलपति प्रो. बीआर कांबोज मीटिंग में हिस्सा लेते हुए।

भाई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है।

मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग

द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार में मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसल के अच्छे उत्पादन के लिए समय पर भूमि की तैयारी के साथ-साथ समय पर बुआई, निराई-गुड़ाई और कीट प्रबंधन बहुत जरूरी है। उन्होंने शोधकर्ताओं से आह्वान किया कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें, जिनमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। भारत में वर्तमान में 501 किग्रा/हेक्टेयर उपज है। विश्व की औसत उपज लगभग 789

किग्रा/हेक्टेयर है। हरियाणा में 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास उगाया जाता है। जिसमें औसत उत्पादन 571 किलोग्राम/ हेक्टेयर होता है।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुलाई हेतु उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी और अर्ध-बौनी किस्म विकसित करने की जरूरत है। प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के बारे में जानकारी दी। एचएयू से डॉ. विजया रानी, इंजीनियर भारत पटेल, इंजीनियर अनूप उपाध्याय और डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
4 नवंबर 2021	13.7.21	4	3-6

वेबिनार

कपास की फसल में मानव के परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर हुई चर्चा

कपास में मशीनीकरण करेगा लागत को कम

जागरण संवाददाता, हिसार : कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी



वेबिनार के दौरान संबोधित करते चौधरी चरण सिंह हरियाणा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व अन्य । • विज्ञापित

मशीनों के बारे में बताया

वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डा. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण के लिए हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी मशीनों के बारे में जानकारी दी।

महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को

बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. अमरजीत कालड़ा ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे

बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 फीसद है। लेकिन उपज वर्तमान में 501 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
31 जून समाचार 2	13.7.21	5	6.8

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज



वेबिनार में सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 12 जुलाई (देवानंद): कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ-साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं

प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठात डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

बिजाई का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम : कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन

हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किग्रा/हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 789 किग्रा/हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी तथा अर्ध-बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे की इस मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत न आए। इस वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी साबित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी। एचएयू से डॉ. विजया रानी, इंजीनियर भारत पटेल, इंजीनियर अनूप उपाध्याय तथा डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे। इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, सहित विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, हरियाणा सरकार में कार्यरत कृषि अभियन्ता आदि मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13.7.21	2	4

वीसी ने कहा-कपास में मशीनीकरण का उपयोग लागत को कम करेगा

हिसार | कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने के लिए मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए।

वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने संबोधित किया। इस वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह थे।